Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

# श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक सहभागिता का एक अध्ययन

ओम प्रकाश
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
डिर्पाटमेण्ट ऑफ स्पेशल एजुकेशन (एच.आई.)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश।

**Article Info**
Volume 4, Issue 2
Page Number : 225-235

**Publication Issue :**
March-April-2021

**Article History**
Accepted : 01 April 2021
Published : 30 April 2021

**सारांश–**अध्ययनकर्ता द्वारा श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक सहभागिता का एक अध्ययन किया गया है। जिसके उद्देश्य के रूप में विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत परीक्षण की प्रकृति को देखते हुए अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में चित्रकूट जनपद में स्थित विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या लिया गया है। अध्ययनकर्त्ता ने समय, धन तथा शक्ति को ध्यान में रखते हुए विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् 30–30 छात्र–छात्राओं का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है। छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता का ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया है। यह पाँच विमाओं पर आधारित है। इस अनुसूची में कुल 50 कथनों का चयनोपरान्त 30 कथन वैध पाये गये। प्रत्येक कथन तीन बिन्दु – (1) हाँ, (2) कभी–कभी, (3) नहीं। जो निम्नांकित है– विद्यालय सम्बन्धी सहभागिता, दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता, शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता, स्व– सम्बन्धी सहभागिता एवं पाठ्यक्रम में सहभागिता को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि–विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता एवं उसकी विमाओं विद्यालय सम्बन्धी सहभागिता, दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता, शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता, स्व–सम्बन्धी सहभागिता एवं पाठ्यक्रम में सहभागिता में अन्तर नहीं है।

**मुख्य शब्द–** श्रवण बाधित छात्र–छात्रा, शैक्षिक सहभागिता, विद्यालय, दृश्य–श्रव्य, शिक्षक, स्व–सम्बन्धी एवं पाठ्यक्रम में सहभागिता।

भारत विश्व का जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा बड़ा देश है। ऐतिहासिक दृष्टि से यदि हम देखें तो भारत एक समावेशी समाज वाला देश है। इसमें विभिन्न अक्षमता/विकलांगता वाले लागे भी समाज का अभिन्न अंग हैं। भारत में विशिष्ट शिक्षा पर एक दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि 'गुरुकुल' शिक्षा प्रणाली से ही विशिष्ट शिक्षा विद्यमान थी। उस समय बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को घ्यान में रखा जाता था। उन्हें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के नाम से नहीं पहचाना जाता था, बल्कि उन्हें उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर सहायता प्रदान की जाती थी।

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

यक्ति विशेष की वैसी अक्षमता जो उस व्यक्ति में सुनने की बाधा उत्पन्न करती है। श्रवण अक्षमता कहलाती है। इसमें श्रवण–बाधित व्यक्ति अपनी श्रवण शक्ति को अंशतः या पूर्णतः गंवा देता है तथा उसे सांकेतिक भाषा पर निर्भर रहना पड़ता है। श्रवण अक्षमता को सही तरीके से समझने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम श्रवण प्रक्रिया (भ्मंतपदह चतवबमकनतम) को समझने का प्रयास किया जाये कि वास्तव में श्रवण प्रक्रिया किस प्रकार संचलित होती है। श्रवण प्रक्रिया कई चरणों में होकर सम्पन्न होती है जो कि निम्नानुसार है –

श्रवण प्रक्रिया में कान के द्वारा आवाज को ग्रहण करना और संदेश को केन्द्रीय तांत्रिका तंत्र (सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम) में भेजना सम्मिलित है। श्रवण प्रक्रिया से लोग अपने आस–पास के वातावरण से संबंध रखते हैं। जो भाषा को सीखने का एक प्रमुख मार्ग हे। श्रवण हमें खतरों से भी सावधान करता है। जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त श्रवण प्रक्रिया हमें वातावरण पर नियंत्रण करने के लिए सहायता करती हैं।

सहभागिता का अर्थ है "दूसरों के साथ मिलकर कार्य करना, विशेषकर एक बौद्धिक प्रयास में"। इसका अर्थ है – साहचर्य, टीम कार्य, संयुक्त प्रयास या भागीदारी। सहभागिता एक प्रक्रिया है, जहाँ दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ मिलकर एक सामान्य प्रयोजन की ओर चिंतन और कार्य करते हैं।

शैक्षिक के संदर्भ में सहभागिता का अर्थ – एक सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों द्वारा एक टीम में कार्य या संयुक्त रूप से प्रयास करना है। जैसे, एक समस्या का समाधान करना, एक परियोजना को पूर्ण करना या एक नए उत्पाद का विकास करना।

हमारी समझ के लिए शैक्षिक सहभागिता का उपयोग, विद्यार्थियों के एक लघु समूहों को उनके स्वयं के और एक–दूसरे के अधिकतम शैक्षिक हेतु एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए शिक्षक द्वारा निर्देशित किया जाना है। शिक्षक प्रत्येक पाठ में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य की पहचान करता/करती है, उस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सहभागी क्रियाकलापों का निरूपण करता/करती है और उन्हें क्रियान्वित करता/करती है।

शैक्षिक सहभागिता एक शिक्षण–शैक्षिक तकनीक है, जो एक ऐसे वातावरण का निर्माण करती है जहाँ एक सामान्य शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थियों के साथ मिलकर कार्य करते हैं। शैक्षिक सहभागिता विविध शैक्षिक उपागमों के लिए एक शब्द माना जाता है, जिसमें विद्यार्थियों या विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों पूरा संयुक्त बौद्धिक प्रयास सम्मिलित हैं।

दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के ऊपर पहले अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था। परन्तु समय के अनुसार केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों के मिले–जुले प्रयासों से इन बच्चों की शिक्षा पर अनेक प्रयास किये गये। भारत में अब दिव्यांग बच्चों की शिक्षा हेतु विशिष्ट विद्यालय, समेकित शिक्षा कार्यक्रम तथा समावेशी शिक्षा कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

विद्यालय शिक्षा प्रदान करने का स्थान है जहाँ शिक्षक एक पूजारी की तरफ अपने बच्चों को शिक्षा देने के साथ–साथ अपनी पूर्ण सहभागिता विद्यालय में प्रदान करता है। विद्यालय किसी एक के सहयोग से नहीं चलाया जा सकता है जब तक की शिक्षा देने वाला एवं शिक्षा लेने वाला अपना पूर्ण सहयोग प्रदान न करें। शिक्षक अपने शैक्षणिक अनुभव के आधार पर बच्चों को सहयोग प्रदान करता है तो बच्चे भी शिक्षा ग्रहण करने में तथा विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने में उतने ही भागीदार होते हैं जितना कि शिक्षक। बच्चों की भागीदारी यदि केवल शिक्षा तक ही सीमित होगी तो विद्यालय का वातावरण अच्छा नहीं हो सकता है।

**समस्या कथन–** श्रवण बाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक सहभागिता का एक अध्ययन।

**अध्ययन का उद्देश्य–** अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सम्बन्धी सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की अन्य श्रव्य–दृश्य सम्बन्धी सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएँ–** प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की अन्य श्रव्य–दृश्य सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**अनुसंधान अध्ययन विधि–** प्रस्तुत परीक्षण की प्रकृति को देखते हुए अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**जनसंख्या–** प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में चित्रकूट जनपद में स्थित विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या लिया गया है।

**न्यादर्श या प्रतिदर्श–** अध्ययनकर्त्ता ने समय, धन तथा शक्ति को ध्यान में रखते हुए विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् 30–30 छात्र–छात्राओं का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है।

**उपकरण–** छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता का ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया है। यह पाँच विमाओं पर आधारित है। इस अनुसूची में कुल 50 कथनों का चयनोपरान्त 30 कथन वैध पाये गये। प्रत्येक कथन तीन बिन्दु – (1) हाँ, (2) कभी–कभी, (3) नहीं। जो निम्नांकित है–

1. विद्यालय सम्बन्धी सहभागिता
2. दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता
3. शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता
4. स्व– सम्बन्धी सहभागिता
5. पाठ्यक्रम में सहभागिता

**प्रयुक्त सांख्यिकी विधि–** अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

**आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–**

**1. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन –**

**$H_{01}$ विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या–1**

**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता के प्राप्तांको की वर्णनात्मक सांख्यिकी**

| लिंग | प्रतिदर्श (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | D ($M_1$~$M_2$) | $\sigma_D$ | C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 41.47 | 5.15 | 3.07 | 1.59 | 1.93 |
| छात्राए | 30 | 38.40 | 7.02 | | | |

* 0.05 स्तर पर असार्थक

चूँकि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता में प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों में प्रयोग करने पर क्रान्तिक अनुपात 1.93 पाया गया जो कि .05 स्तर पर दिये गये निर्धारित मान 2.00 से कम है। अतः हम अपने शून्य परिकल्पना को ''**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' .05 स्तर पर स्वीकृत कर सकते हैं और यह मान लेते हैं कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता के दोनों समूहों के मध्यमानों में .05 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है और दोनों समूहों में अन्तर नहीं पाया जाता है।

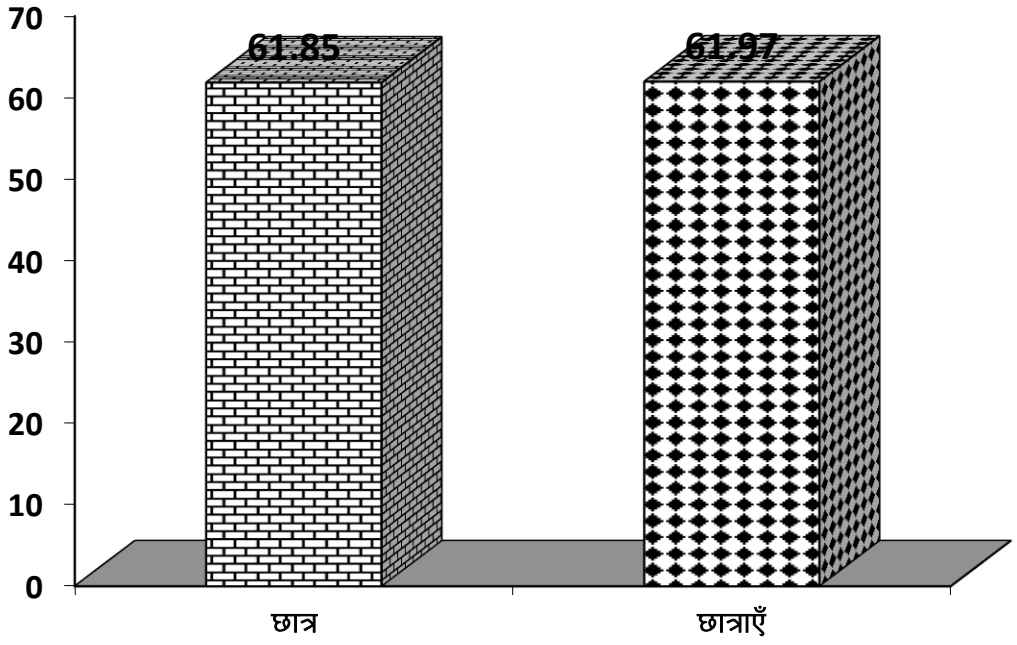

**2. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन –**

**$H_{02}$ विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या–2**

**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सहभागिता के प्राप्तांको की वर्णनात्मक सांख्यिकी**

| लिंग | प्रतिदर्श (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | D ($M_1$~$M_2$) | $\sigma_D$ | C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 5.70 | 1.29 | 0.37 | 0.37 | 1.00 |
| छात्राए | 30 | 5.33 | 1.58 | | | |

* 0.05 स्तर पर असार्थक

चूँकि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सहभागिता में प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों में प्रयोग करने पर क्रान्तिक अनुपात 1.00 पाया गया जो कि .05 स्तर पर दिये गये निर्धारित मान 2.00 से कम है। अतः हम अपने शून्य परिकल्पना को ''**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' .05 स्तर पर स्वीकृत कर सकते हैं और यह मान लेते हैं कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की विद्यालय सहभागिता के दोनों समूहों के मध्यमानों में .05 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है और दोनों समूहों में अन्तर नहीं पाया जाता है।

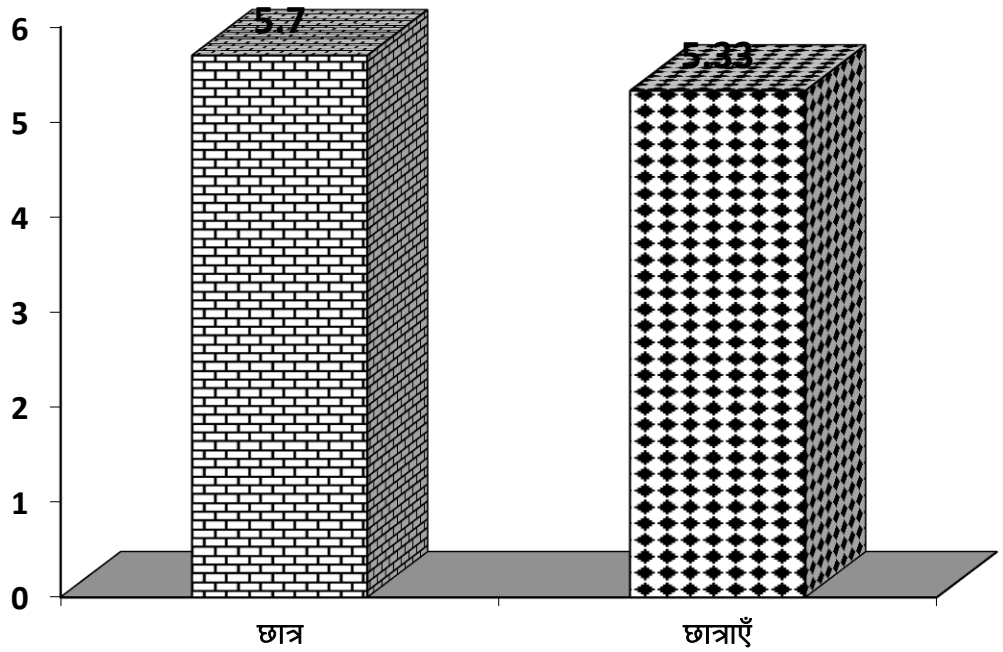

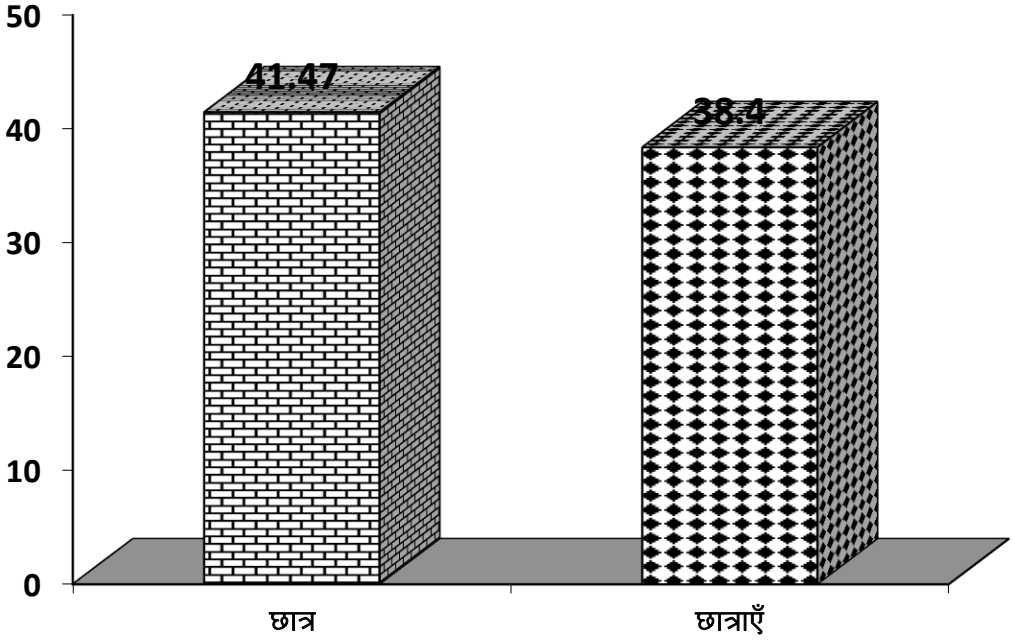


**3. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन –**

**$H_{03}$ विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या–3**

**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता के प्राप्तांको की वर्णनात्मक सांख्यिकी**

| लिंग | प्रतिदर्श (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | D ($M_1$~$M_2$) | $\sigma_D$ | C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 8.13 | 1.70 | 0.73 | 0.50 | 1.40 |
| छात्राए | 30 | 7.40 | 2.13 | | | |

* 0.05 स्तर पर असार्थक

चूँकि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता में प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों में प्रयोग करने पर क्रान्तिक अनुपात 1.40 पाया गया जो कि .05 स्तर पर दिये गये निर्धारित मान 2.00 से कम है। अतः हम अपने शून्य परिकल्पना को ''**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' . 05 स्तर पर स्वीकृत कर सकते हैं और यह मान लेते हैं कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता के दोनों समूहों के मध्यमानों में .05 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है और दोनों समूहों में अन्तर नहीं पाया जाता है।

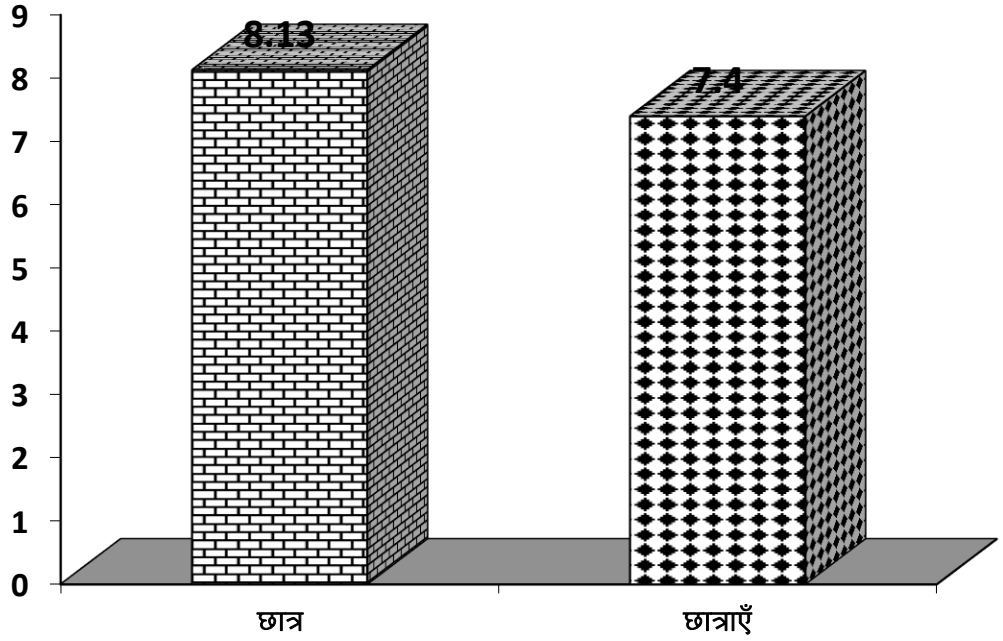


**4. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन –**

**$H_{04}$ विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या–4**

**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता के प्राप्तांको की वर्णनात्मक सांख्यिकी**

| लिंग | प्रतिदर्श (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | D ($M_1$~$M_2$) | $\sigma_D$ | C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 10.10 | 1.56 | 0.90 | 0.51 | 1.76 |
| छात्राए | 30 | 9.20 | 2.31 | | | |

* 0.05 स्तर पर असार्थक

चूँकि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता में प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों में प्रयोग करने पर क्रान्तिक अनुपात 1.76 पाया गया जो कि .05 स्तर पर दिये गये निर्धारित मान 2.00 से कम है। अतः हम अपने शून्य परिकल्पना को ''**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' .05 स्तर पर स्वीकृत कर सकते हैं और यह मान लेते हैं कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता के दोनों समूहों के मध्यमानों में .05 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है और दोनों समूहों में अन्तर नहीं पाया जाता है।

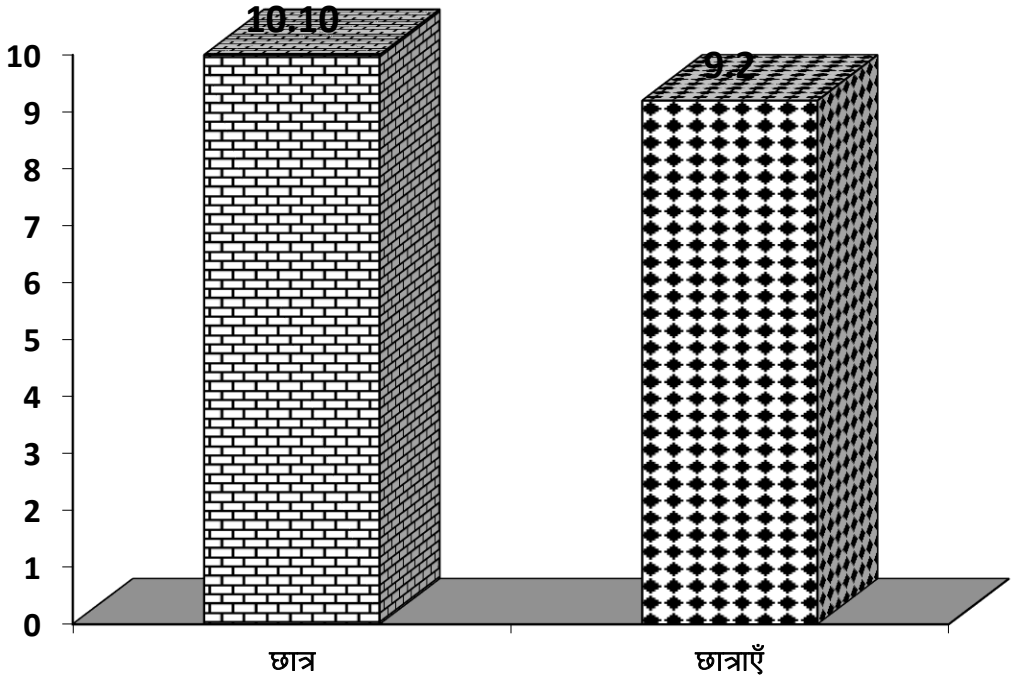


**5. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन –**

**$H_{05}$ विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका संख्या–5**

**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता के प्राप्तांको की वर्णनात्मक सांख्यिकी**

| लिंग | प्रतिदर्श (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | D ($M_1$~$M_2$) | $\sigma_D$ | C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 13.60 | 2.36 | 1.00 | 0.68 | 1.47 |
| छात्राए | 30 | 12.60 | 2.85 | | | |

* 0.05 स्तर पर असार्थक

चूँकि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता में प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों में प्रयोग करने पर क्रान्तिक अनुपात 1.47 पाया गया जो कि .05 स्तर पर दिये गये निर्धारित मान 2.00 से कम है। अतः हम अपने शून्य परिकल्पना को ''**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' .05 स्तर पर स्वीकृत कर सकते हैं और यह मान लेते हैं कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की स्व–सम्बन्धी सहभागिता के दोनों समूहों के मध्यमानों में .05 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है और दोनों समूहों में अन्तर नहीं पाया जाता है।

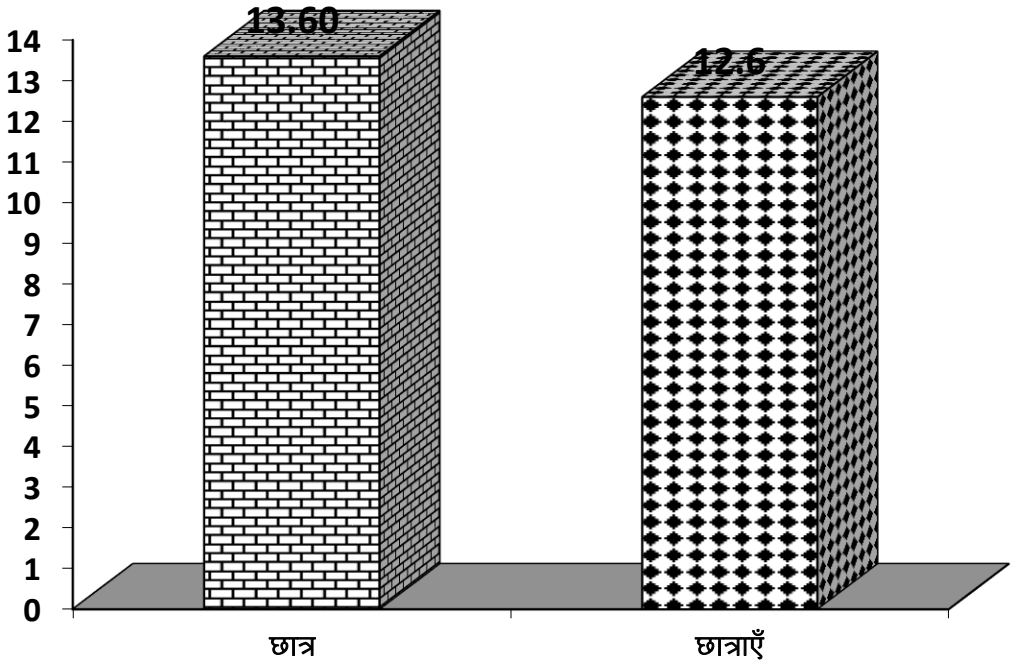


6. विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता का तुलनात्मक अध्ययन –

**$H_{06}$** विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या–6

विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता के प्राप्तांको की वर्णनात्मक सांख्यिकी

| लिंग | प्रतिदर्श (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | D ($M_1$~$M_2$) | $\sigma_D$ | C.R. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 30 | 3.93 | 1.26 | 0.06 | 0.32 | 0.19 |
| छात्राए | 30 | 3.87 | 1.22 | | | |

* 0.05 स्तर पर असार्थक

चूँकि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता में प्राप्त प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विधियों में प्रयोग करने पर क्रान्तिक अनुपात 0.19 पाया गया जो कि .05 स्तर पर दिये गये निर्धारित मान 2.00 से कम है। अतः हम अपने शून्य परिकल्पना को ''**विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' .05 स्तर पर स्वीकृत कर सकते हैं और यह मान लेते हैं कि विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की पाठ्यक्रम में सहभागिता के दोनों समूहों के मध्यमानों में .05 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है और दोनों समूहों में अन्तर नहीं पाया जाता है।

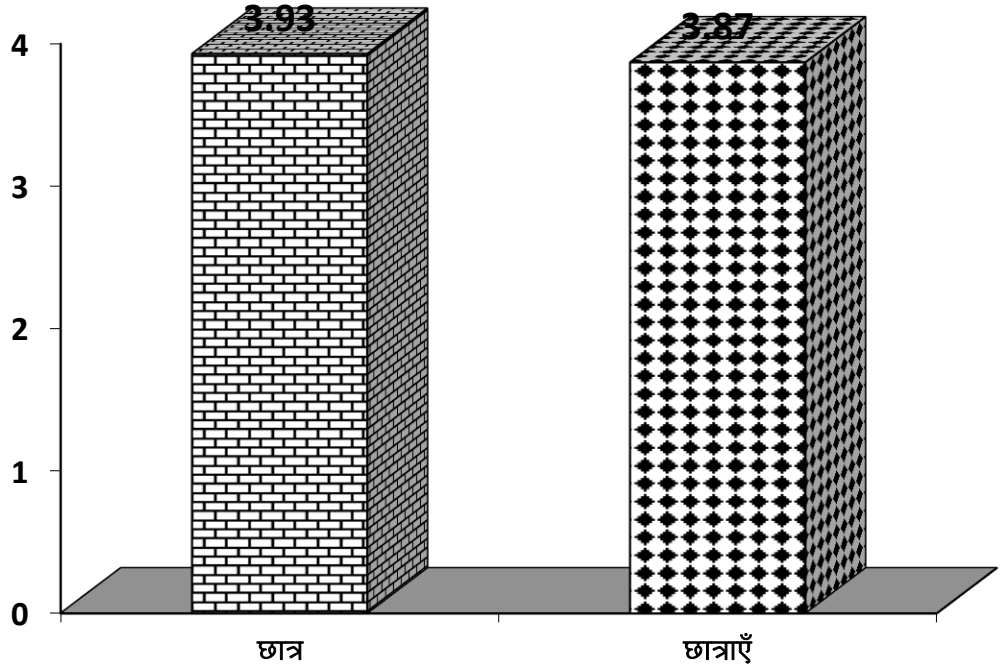


**निष्कर्ष**–निष्कर्ष में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये– विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत् श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं की शैक्षिक सहभागिता एवं उसकी विमाओं विद्यालय सम्बन्धी सहभागिता, दृश्य–श्रव्य सम्बन्धी सहभागिता, शिक्षक सम्बन्धी सहभागिता, स्व–सम्बन्धी सहभागिता एवं पाठ्यक्रम में सहभागिता में अन्तर नहीं है।

अन्तर न पाया जाना यह दर्शाता है कि विशेष विद्यालयों श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं को विद्यालय, प्रबन्धक, अध्यापकों एवं प्रशासकों तथा सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं व सेवाएँ समान है। विद्यालय में श्रवण बाधित छात्र–छात्राओं के प्रति समान दृष्टिकोण रखते हैं तथा उनकी सुविधाओं एवं उनकी जरूरतों को समान रूप से पूरा किया जाता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, राकेश (2013). दिव्यांग तथा सामान्य विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, पिलखुवां हापुड़ पंचशील नगर : मोनाड़ विश्वविद्यालय।
2. पाल, जितेन्द्र (2013). चित्रकूट जनपद में स्थित जे.आर.एच.यू. में व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रहे श्रवण बाधित बालकों के शैक्षणिक कार्यक्रम में आने वाली समस्याओं का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद : नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय।
3. बरनवाल, नागेश्वरनाथ (2014). श्रवण बाधित बालकों को शिक्षा में मिलने वाली रियायतों एवं सुविधाओं के प्रति उनके माता–पिता की जागरूकता का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, फैजाबाद : डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय।
4. कुमार, महेन्द्र (2017). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, जगत्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट

5. Arnold, C.K. (2012). Support needs of siblings of people with developmental disabilities. Intellectual and developmental disabilities vol.50,No.5,pp.373-382 Retrieved from http://alliance1.metapress.com/on1-3-2014.
6. Craine, J.L., Tanaka, T.A. (2009). Understanding adolescent delinquency: The role of older sibling's delinquency and popularity with peers.Merrill- palmer quarterly, vol.55,No.4,pp.436-453 Retrieved from http://www.jstor.org/ stable/01/03/2014
7. Kimberly, A.U.(2012). Sibling relationships and influences in childhood and adolescence.Journal of Marriage and family,vol.74,pp.913-930
8. Knott, Lewis & Wiliams, (2012). Relationship quality as a moderator of anxiety in siblings of Children diagnosed with autism spectrum disorders or down syndrome. child fam stud. Retrieved fromhttp://www.springer.org/stable/02/03/2014